एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गुलदाउदी (सेवन्ती) की उन्नत खेती

(*आकाश चंद्रा, भावेश वर्मा, निखिल तिवारी, विपीन मिश्रा एवं मंदास बंजारे)
इंद्रा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़
*संवादी लेखक का ईमेल पता: akashchandra356@gmail.com

गुलदाउदी का पौधा एक लम्बे समय तक खिलता रहने वाला और सुंदर फूलों का पौधा होता है, जो बगीचों, उद्योग और धरो की सजावट के लिए उपयोग होता है । गुलदाउद अपने अनेक रंगो व आकार के कारण पुष्प बजार मे अपनी एक अलग स्थान बनायी हुए है।

जलवायु :- गुलदाउदी की खेती के लिए आदर्श जलवायु का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह पौधा उच्चतम गुणवत्ता के फूल प्रदान करने के लिए निम्नलिखित जलवायु शर्तो की आवश्यकता होती है।

गुलदाउदी का आदर्श तापमान 15° से 25°C के बीच होता है जो उच्च तापमान और बहुत कम तापमान से बचाता है।, मृदु तथा उनिवेषी जलवायू गुलदाउदी खेती के लिए उपयुक्त होता है। और बारिश की मात्रा 150 से 200 cm के बीच आनी चाहिए। गुलदाउदी की बढ़ती आवृति और बढ़ते हुए तापमान मे अधिक फूल प्रदान करते है, और इसके लिए पूरे दिन धूप युक्त समय अदर्शा होता है। गुलदाउदी का विकास ज्यादातर सुबह की धूप मे होता है और यह उच्च मूल्यवान फूल प्रदान करने मे सहायक होता है। इस प्रकार अदर्शा जलवायु शर्तो के साथ गुलदाउदी की खेती से किसान अधिक आय प्राप्त कर सकते है।

मृदा - गुलदाउदी की आदर्श मिट्टी उच्चतम गुणवत्ता वाले फूलो की खेती के लिए महत्वपूर्ण होती है। यह मिट्टी अच्छे जल निकास और पानी की सही संवर्धन की सुविधा प्रदान करती है, और गुलदाउदी के पौधों के विकास को सहायक बनाती है। PH 6.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए और उचित खाद सप्लाई के साथ पूर्व प्रक्रिया का भी ध्यान रखना चाहिये

भूमि की तैयारी – यह एक उथली जड़ वाली फसल है अतः इसके लिए अच्छी क्यारो के निर्माण के लिए 40–50 cm गहरी जुताई की आवश्यकता होती है। 2–3 जोताई करके मिट्टी को भूरभूरी व खरपतवार रहित कर लेना चाहिए। अतिंम जुताई के दौरान 8– 10 क्विंटल गोबर की खाद प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिला देना चाहिए

पौध प्रवर्धन

बीजों से प्रसारण - यह सबसे सामान्य तरीका है जिसमे बीजो का प्रयोग करके पौधों का प्रसारण किया जाता है बीजो को पूण– प्रक्रिया जैसे कि सिंचाई, सुखाना और उच्च गुणवत्ता वाले बीजो की उपयुक्त तैयारी के साथ बोवाई किया जाता है।

वनस्पति प्रवर्धन -इसमें पौधों की छोटी टुकड़ियों को मिट्टी मे लगाकर नए पौधे उत्पन्न किये जाते है यह विशिष्ट प्रकार की गुलदाउदी की प्रजातियों की वृद्धि के लिए किया जाता है।

कलम विधि के द्वारा -बहुवर्षीय गुलदाउदी का प्रवर्धन कलम विधि के द्वारा किया जाता है इसका प्रवर्धन मुख्यत: अंतिम तने की कटिंग द्वारा किया जाता है, इस विधि मे रोग रहित मातृ पौध के 4–5 cm ऊपरी भाग से कलम लिया जाता है लिए गये कलम की निचली पतियों को निकाल कर केवल 3–4 पतियाँ शेष रखनी चाहिए लिए गये कलम को अच्छी व जल्दी जड़ प्राप्त करने के लिये कलम के अंतिम सिरे को IBA के 150 से 250 ppm के घोल मे डुबाकर लगाना चाहिए। इस विधि में 3–4 सप्ताह मे कलम में नयी पत्तिया आ जाती है इस विधि मे मातृ पौध के कलम अंतिम जून से लेकर जुलाई के समय लिया जाता है कलम मे जड़ो के निकलते के लिए 21–27 °C तापमान उपयुक्त होता है

जड़ संकर विधि -पौधे के पुष्पन हो जाने के बाद मातृ पौध की सुखी हुई टाहली को काटकर लगा देना चाहिए। इसको कुछ उर्वरक भी देने की आवश्यकता हो सकती है, जिससे सकर अधिक संख्या में निकले, इस पौधे से जब सकर निकलकर 10–15 cm के हो जाए तब उन्हें काटकर अलग लगा देना चाहिए। इनकी लंम्बी जड़े जो 1.25 cm से अधिक हो उनको काट देना चाहिए आधार की पत्तियाँ भी अलग कर देना चाहिए। फरवरी मार्च मे यह कार्य किया जाना चाहिए

किस्मे

अब पिंक - यह किस्म जल्दी तैयार होने वाली किस्म है जो कि 50 से 55 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी ऊँचाई 18–28 cm व फुल हलका गुलाबी रंग के होते है। गमलो में लगाने के लिए उपयुक्त होत है।

अब बरगंडी – यह किस्म 60 से 65 दिनों में तैयार हो जाती है। इसकी ऊँचाई 20 से 25 cm व फुल मेहरून रंग के होते है व 5 से 6 cm व्यास के होते है जो कार्तित फूलों के लिए उपयुक्त होते हैं।

टूरमलेट – यह किस्म मे 50% पुष्प 60–65 दिनों मे तैयार हो जाती है, इसकी उचाई लगभग 22–25 cm होता है व फूल 6–7 cm व्यास के व गहरे गुलाबी रंग के होते है।

माउंट केन्या – यह किस्म 65–70 दिनों मे तैयार हो जाती है इसका पौधा 22 से 25 cm ऊंचाई के खाथ हलका गुलाबी रंग के होते है।

अब पर्पल – यह किस्म 60 – 65 दिनों मे तैयार हो जाती है इसका पौधा 20 cm उचाई के होती है व फूल 5 से 5.5 cm व्यास के व संतरी रंग के होते है। फूल देखते मे आकृष्क होते है

माउंट प्लेसेंटा – यह किस्म 65–70 दिनों मे तैयार हो जाती है इसकी उचाई 20 से 22 cm व फूल पीले रंग के होते है फूल गुछो में आते हैं।गमलो में लगाने के लिए उपयुक्त होते हैं।

अब एप्रीकॉट – यह किस्म 66 दिनों मे तैयार हो जाती है, इसका पौधा 30 cm ऊंचाई के होते है।

माउंट जूनो – यह किस्म 65 दिना में तैयार हो जाती है, इसकी ऊंचाई 22 cm व फूल सफेद रंग के गुछो में आते है।

सविता – यह किस्म 60 दिनो में तैयार हो जाती है इसकी उचाई 35 cm के होते है व संतरी रंग के फूल होते है।।

सिंचाई – गुलदाउदी को वानस्पतिक वृद्धि के समय उचित मात्रा मे पानी की आवश्यता होती है, उचित मात्रा मे पौधों को पानी उपलब्ध ना होने पर इसकी वानस्पतिक वृध्दि व पुष्पण को प्रभावित करती है। एवं यह जलभराव के लिए भी संवेदनशील है सिचाई की संखिया मौसम व मृदा मे उपस्थित नमी के अनुसार देना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण – गुलदाउदी की अच्छी पैदावार के लिए खरपतवार नियंत्रण आवश्यक है। खरपतवार के प्रभावी नियंत्रण के लिए 10–15 दिन के अंतराल पर हाथ से गुड़ाई की जानी चाहिए, बड़े पैमाने पर हाथ से निदाई खर्चीला हो सकता है। इसके स्थान पर रासायनिक खरपतवारनाशी जैसे आवसोफ्लोरफेन या अट्रैजिन या पेंडिमेथालिन 0.6–12 kg प्रति एकड़ के अनुसार प्रयोग किया जाना चाहिए

पादप वृद्धि नियामक का उपयोग –गुलदाउदी की फसल मे विभिन्न प्रकार के पादप वृद्धि नियामको मे जिबरेलिन एसिड 100–150 PPM का प्रयोग प्रभावी पाया गया है, इसका प्रयोग पौधा की लबाई बढ़ाने

के लिए व तापमान की जरूरत को पूरा करने के लिए, फूलो की गणवत्ता बढ़ाने व पुष्प के जीवन काल को बढाने के लिए भी किया जाता है।

पिचिंग -गुलदाउदी के पौधों की वृद्धि और पुष्पों की संख्या को बढ़ाने के लिए किया जाता है इसमे पौधों की क्यारी की सतह से 10– 20 cm या 6–7 पत्तियां छोड़कर शीर्षक भाग को हाथ से नोच कर पौधो से अलग कर देते है।

डिसबडिंग – यह ज्यादा कलियों को तोड़कर हटाने की विधि है, इसमें फूलों की संख्या को घटाकर उसकी गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है ।

सहारा देना -कार्तित पूष्पो की डठडी का सीधा होना गुणवत्ता युक्त कर्तित पुष्प की बहुत बड़ी विषेषता है गुलदाउदी के पौधों की शाखाओं को सीधा रखने व पौधा को झुकने से बचाने के लिए बांस की डंडियों का व प्लास्टिक की जालियो का प्रयोग किया जाता है। प्लास्टिक की जालियो की 2–3 परतो का प्रयोग किया जाना चाहिए। पहली परत 20 –25 cm को उचाइ पर व दूसरी व तीसरी परत पहली परत के बीच कमषः 1 फिट का फासला रखना चाहिए यह कार्य पौध रोपड़ा के बाद कर लेना चाहिए

तुड़ाई एवं उपज -गुलदाउदी की फूलों को तभी काटने चाहिए जब वे पूरी तरह से खिल जाये व फूलों की तुड़ाई सुबह या शाम के समय करना चाहिए । फूल वाली टहनी को जमीन के लगभग 10 cm की ऊँचाई से काटना चाहिए काटने के बाद निचला 5–6 cm हिस्सा साफ पानी में डूबकर किसी छायादार व ठण्डे कमरे में 3–4 घण्टे के लिए रख देना चाहिए। गुलदाउदी की उपज औसतन 150 – 200 कार्तित फूल प्रति वर्ग मीटर प्राप्त होता है व खुले फूल की उपज 15–50 क्विटल तक प्राप्त होता है।

भंडारण -गुलदाउदी की तुड़ाई के बाद 0.5–1 डिग्री तापमान पर 10–15 दिन तक सुरक्षित रखा जा सकता है.

रोग व्याधिया

विल्ट –इस व्याधि से प्रभावित पौधा के तने मिट्टी के स्तर के पास गहरे भूरे रंग के होकर सुख जाते है। निचली पत्तिया पीली पड़कर मुरझाने लगते है। मुदा को डईथेन एम 45 अथना 2 gm प्रति लीटर पानी दर से अथवा करबेंडनजीम 1 gm प्रति लीटर पानी दर के घोल से उपचारित करके इस रोग का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

चूर्णिन आस्ति –इस रोम से प्रभावित पौधों की पत्तियों के ऊपरी सतह पर सफेद चूड़ के समान बीजाणु के धब्बे दिखाई देते हैं, इसके रोकथाम के लिए वेटबल सल्फर अथवा सल्फलफेक्स अथवा डाईकोफॉल के 0.2% घोल का छिड़काव उपयुक्त होता है।

पत्तियो के धब्बे -यह एक कवक जनित रोग है, यह व्याधि गुलदाउदी में सामान्यतः पायी जाने वाली व गंभीर रोग है। पत्तिया पर भूरे रंग के धब्बे दिखाई देते है जो की नमी की उपस्थिति में संख्या में व आकार मे बढ़ने लगते है। जिससे पत्तिया पीली पड़कर मर जाती है। इसके रोकथाम के लिए वातावरण को शुष्क रखकर व प्रारंभिक स्थिति में प्रभावित पत्तियो को चुनकर नष्ट कर देना चाहिए इसके नियंत्रण के लिए कैप्टन 2 gm दवा प्रति लीटर पानी की दर से अथवा मनकोजेब 2 gm प्रति लीटर पानी की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए

बैक्टीरियल ब्लाइट – दिन के समय शाखाओ का मुरझाना व रात के समय ठीक दिखाई पड़ते है यह इस बिमारी का प्रमुख लक्षण है तने का षिरा भूरा होकर टूटकर गिर जाती है। स्क्रोटोमैसीन के उपचार से इसकी रोकथाम की जा सकती है।

विषाणु जनित रोगरू – गुलदाउदी में विभिन्न विषाणुओं का प्रक्राप होता है। विषाणु से प्रभावित पौधे की वृद्धि रुक जाती है व फूल का आकार भी छोटा हो जाता है व रंग भी विकृत हो जाता है। विषाण मुख्यत एफिड व थ्रिप्स व खरपकार के माध्यम से फैलते है विषाण जनित रोग के रोकथाम के लिए प्रभावित पौधों नष्ट, करके व एफिड, थ्रिप्स के रोकथाम के लिए 10 दिन के अंतराल पर 0.1% रोगोर अथवा इमिडकरोपिड का छिड़काव करना चाहिए

कीट –

एफिड – यह कीट हरे से काले रंग के होते है। वे पत्तियो व तने से रस चूसते है व चिपचिपा शहद के समान द्रव्य छोड़ते है। साथ ही साथ विषाणु जनित रोगों को भी फैलाते है। इसके रोकथाम के लिए डैमेथोएट 0.1%की दर से अथवा इमिडचलोरोपिड 10 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

थ्रिप्स – ये किट सफेद से काले रंग के होते है। ये पत्तियो के सिरो से रस चूसकर उसे विकृत व धब्बेदार बना देते है व साथ ही साथ फूलो को भी प्रभावित करते है। इसके रोकथाम के लिए डाईमेथोएट 0.1 की दर से 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

लाल मकड़ी – यह लाल रंग के कीट पत्तियों के निचली सतह पर पाये जाते है, ये पौधे व कलियों से रस चूसते है, प्रभावित भाग हल्के पीले रंग के दिखाई देते है। ये प्रमुख रूप से गर्मी के समय दिखाई देते है। इसके रोकथाम के लिए 10 दिन के अंतराल पर दो बार डाईकोफॉल दवा का 0.1 प्रतिशत की दर से छिडकाव करना चाहिए।

सूत्रकृमि –इनके कारण पौधा में बाऊनपन, समय से पहले पीला पड़ना, पत्तियों का सूखना फूलो का आकार से कम होना और जड़ो पर घाव हो जाते है। इसके नियंत्रण के लिए फ्यूरॉडानया नीम की खाली का प्रयोग अथना कोई उपयुत्त सूत्रकृमि नाषक दवा का उपयोग करना चाहिए।